Dr. Ramendra Kumar Singh-II
P.G. Dept. of Psychology
M.B.R.R.V. Pd. Singh College, Ara

TOPIC – CRITERA OF ABNORMALITY (PART-B)

(U.G. SEM. IV (MJ.C-5)

सामान्यता और असामान्यता एक सापेक्ष सम्प्रत्यय (Relative Concept) है। यही कारण है कि ऐसी परिस्थिति में मनोवैज्ञानिकों द्वारा सामान्यता एवं असामान्यता के स्वरूप को निर्धारित करने के लिये कई तरह की मान्यताओं अथवा विचारधाराओं या मापदंडों का प्रतिपादन किया गया है। इन मापदंडों अथवा दृष्टिकोणों को असामान्यता मापन की कसौटियाँ भी कहा जाता है। Kisker (किश्कर) 1985 द्वारा उन तमाम कसौटियों को दो भागों में विभक्त किया गया है। इसके प्रथम भाग की व्याख्या इसके प्रथम पार्ट (A) में किया जा चुका है। अतः यहाँ हम किश्कर द्वारा बाँटे गए असामान्यता के दूसरे भाग यानी द्वितीय पार्ट (B) पर चर्चा करना उचित समझते हैं :—

(ख) व्याख्यात्मक मॉडल (Explanatory Model or criteria)

किश्कर (1985) द्वारा वर्गीकृत असामान्यता की व्याख्यात्मक मॉडल में आने वाले कसौटियों द्वारा असामान्यता की व्याख्या उनके कारणों के आलोक में किया जाता है। वस्तुतः व्याख्यात्मक मॉडल असामान्य व्यवहार का तात्विक मॉडल (Substance criterion) है। यही कारण है कि Explanatory model असामान्य व्यवहारों की कारणों (Causes) को पता लगाने में सफल हो जाता है और वैज्ञानिकता के नजदीक पहुँच पाता है क्योंकि वर्णात्मक मॉडल (Descriptive model) की तुलना में असामान्य व्यवहार की व्याख्या अधिक तथ्यपरक ढंग से करने में सफल हो जाता है। KISKER (1985) ने व्याख्यात्मक मॉडल के अन्तर्गत मूलतः तीन

प्रमुख दृष्टिकोणों को रखा है:-

(1) व्याधिकीय दृष्टिकोण (Pathological criterion)

असामान्यता की व्याख्या की उपरोक्त मॉडल के द्वारा असामान्यता की व्याख्या मानसिक विकृतियों (Mental Disorder) के आधार पर की जाती है। इनके अनुसार जो लोग मानसिक रोगों से ग्रस्त होते हैं, उन्हें असामान्य कहा जायेगा। इस दृष्टिकोण को मानने वाले मनोवैज्ञानिकों द्वारा जैविक विकारों (Biological factors) से उत्पन्न असामान्यता या मनोविकार जैसे दोषपूर्ण स्नायुमंडल, दोषपूर्ण वंशपरम्परा, जैविक रसायन उपद्रव, जीन दोष आदि से उत्पन्न असामान्यता को व्याधिकीय दृष्टिकोण के तहत रखा गया है। इस विचार के पोषक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार सामान्यता और असामान्यता में गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों प्रकार के अन्तर होते हैं। इसे Medical Model या Disease Model भी कहा जाता है। हालांकि ग्रिसिंगर (1845) क्रेपलिन (1883) आदि ने आरंभ में ही इस तरह की बातों पर चर्चा की थी फिर भी आगे चलकर कई नैदानिक मनोवैज्ञानिक जैसे पेकेल (Paykel 1982), हिंज एवं सहयोगी (Heinzel et al 1994) आदि ने अपने वैज्ञानिक अध्ययन से इसे स्थापित किया।

इस मॉडल के अन्तर्गत Biological factors पर अधिक जोर दिया गया है। Environmental एवं Situational factors और कुछ अन्य कारक भी Abnormality के लिए उत्तरदायी होते हैं। कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जो मानसिक रूप से अस्थिर और विक्षुब्ध होते हैं पर उनको मानसिक रोगी नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि वे मानसिक रोगी नहीं होते हैं। अतः यह कसौटी भी पूर्णतः विश्वसनीय और वैध नहीं है।

(2) मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण (Psychological criterion) :-

असामान्यता की व्याख्या की उपर्युक्त मॉडलों में असामान्य व्यवहार की मनोवैज्ञानिक आधार या दृष्टिकोण से व्याख्या की गई है।

Scanned with OKEN Scanner

इस दृष्टिकोण के पोषक मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि असामान्यता मानसिक संघर्षों की उपज होती है, या अपअनुकूलित व्यवहारों के सीखने से होती है। इसी परिप्रेक्ष्य में कार्सन, बुचर और कोलमैन (1988) ने इसके अन्तर्गत चार मॉडल को रखा है—

(a) Psychodynamic Model (b) Behaviouristic Model
(c) Humanistic Model (d) Interpersonal Model

Psychodynamic Model अचेतन की गुत्थियों को असामान्यता का कारण मानता है, वहीं व्यवहारवादी मॉडल का मानना है कि जब कोई व्यक्ति अपअनुकूलित व्यवहार को सीख लेता है तो असामान्य हो जाता है। मनोगत्यात्मक मॉडल मूलतः Sigmund Freud की मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा पर आधारित है जिसमें बाद के मनोवैज्ञानिकों अथवा ने भी कुछ संशोधित किया। व्यवहारवादी मॉडल के मूलतः पावलव, थॉर्नडाइक, वाट्सन स्कीनर आदि के अनुकूलन पर आधारित है। मानवतावादी विचारधारा के अनुसार असामान्य व्यवहार तब पनपता है, जब व्यक्ति की अन्तःशक्ति की विकास अवरुद्ध हो जाती है अथवा अन्तःशक्ति को प्राप्त करने में असफल हो जाता है। यह मैसलो, रोजर्स, आलपोर्ट, फ्रिज, पलर्स के शोधों पर आधारित है। अन्तर्वैयक्तिक मॉडल के समर्थक मनोवैज्ञानिक असामान्यता का कारण Cognitive Process में गड़बड़ी को मानते हैं। इनके अनुसार जब व्यक्ति Cognitive Style develop कर लेता है तब किसी चीज का प्रत्यक्षीकरण गलत ढंग से यानी अपने अनुसार करता है और यही उसे असामान्य बना देता है।

समालोचनात्मक ढंग से अगर देखा जाए तो यह दृष्टिकोण असामान्यता की उत्पत्ति में मनोवैज्ञानिक कारणों को आवश्यकता से कुछ अधिक ही तरजीह देता प्रतीत होता है, जबकि असामान्यता का एक महत्वपूर्ण कारण Biological factors एवं कुछ अन्य कारक भी उत्तरदायी हैं। हम कह सकते हैं कि यह दृष्टिकोण भी दोषमुक्त नहीं है।

Scanned with OKEN Scanner

(3) समायोजन आधारित मापदण्ड (Adjustment Criterion)

इस दृष्टिकोण के अनुसार समायोजन ही सामान्यता का आधार है। जो व्यक्ति जिस हद तक अपने Self (स्व) और वातावरण में समायोजन स्थापित कर लेता है, वह उसी हद तक सामान्य होता है। क्योंकि ऐसे लोग अपने आन्तरिक माँगों एवं वाह्य वातावरण की माँगों के बीच संतुलन स्थापित कर अपने (Self) एवं समाज के लिये हितपरक कार्य करते हैं। यानी समायोजन में सफल तो Normal और असफल तो Abnormal. इस दृष्टिकोण के मानने वालों का मानना है कि असामान्य व्यक्ति, चिंता, व्याधि, मानसिक संघर्ष आदि के शिकार होते हैं और समाज के लिये अहितकर प्रमाणित होते हैं। कुसमायोजन की उत्पत्ति ग्रंथियों की विकार (genesis) जैविक, मनोवैज्ञानिक, परिस्थितिजन्य या सामाजिक कुछ भी हो सकता है।

हलाँकि इसमें भी स्पष्टता का अभाव है और असामान्यता के कारणों पर अधिक जोर देता प्रतीत होता है। उसका निर्धारण क्या होना चाहिए? इस पर कुछ स्पष्ट नहीं है। तथापि यह एक समग्र दृष्टिकोण तो कहा ही जायेगा।

निष्कर्ष :- अब तक की व्याख्या से स्पष्ट हो चुका है कि कोई भी दृष्टिकोण पूर्णतः वैज्ञानिक एवं दोषमुक्त नहीं है फिर भी Adjustment Criterion को सभी कसौटियों की तुलना में अधिक तरजीह दी जानी चाहिए क्योंकि यह जैविक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और परिस्थितिजन्य सभी कारकों को असामान्यता के लिए महत्वपूर्ण मानता है। अतः यह दृष्टिकोण अपने आप में सभी विचारधाराओं को समाहित करने का प्रयास करता है। यह समग्रता को महत्व देकर बहुत हद तक वैज्ञानिकता के नजदीक पहुँच जा सकता है।

R Singh